

# कुछ पाना है, तो 'कुछ' छोड़ो

बिना त्याग के भाग्य नहीं। बिना छोड़े दूसरे से न जुड़े। जैसे हम पौधे की कलम लगाते हैं, तब भी एक पौधे से उस टहनी को अलग होना पड़ता है। अलग हुई टहनी दूसरे पौधे के साथ उपयुक्त तौर तरीके से बांधा जाता है, तब वो विकसित होता है और फलित होता है। इसी तरह हमें कुछ पाना है तो कुछ छोड़ना है। कुछ कुछ पाना है, तो कुछ कुछ छोड़ो। बहुत कुछ पाना है तो बहुत कुछ छोड़ो। और सबकुछ पाना है तो 'सबकुछ' छोड़ो। आपको पता ही होगा कि महावीर और महात्मा बुद्ध दोनों ही राजपुत्र थे, पर सबकुछ पाने के लिए उन्होंने सबकुछ छोड़ दिया। छोड़ना ही तो पाने का द्वार है। छूटेगा तो रागी कहलाओगे, छोड़ोगे तो वैरागी कहे जाओगे और खुद में

को आरामदायक महसूस नहीं करेंगे, बेचैनी होगी, और 'कुछ चाहिए' यह शब्द जहन में सदा बना रहेगा।

तो हम बात कर रहे थे, पाना है या सबकुछ पाना है? अब हमारा रहन सहन और हमारी सोच और हमारे कर्म किस तरह के हैं, कैसी गुणवत्ता के हैं?

**जैसे एक विद्यार्थी के जहन में आया कि मुझे टॉपर बनना है, तो उसके सामने चार बातें मुख्यतः होंगी - जिसको उसे छोड़नी होंगी।**

1. आलस्य, 2. अलबेलापन, 3. बहानेबाजी और 4. मौज शॉक। अगर इन चारों बातों के वो वशीभूत है, तो उसका सपना धरा का धरा ही रह जायेगा। अब इन चार बातों की जगह अन्य चार बातों

भी साधारण ही बनेंगे।

कई बार ये स्मृति हमारे से ओझल हो जाती है कि ये समय किसके लिये और किस कार्य के लिये है। उस समय यदि हम स्वयं को विद्यार्थी समझते हैं तो मेरा कर्तव्य है पढ़ना और मौज शॉक को छोड़ना। पर आज के संदर्भ में देखा जाता है कि ये सब छोड़ना आसान नहीं लगता। तब हमारे अंदर से आवाज आती है कि सब तो ये कर रहे हैं, तो क्यों न मैं भी इसमें शामिल हो जाऊँ! ऐसा होता है ना! इसी तरह हम चाहते तो हैं कि सबकुछ मुझे मिले, सबकुछ पा लें, पर हम सबकुछ पाने के लिए, सबकुछ छोड़ने के लिए समझौता करते हैं। इसी कारण डकुछ चाहिए% का प्रश्न सदा ही हमारे सामने बना

**कुछ पाना है तो कुछ छोड़ना है। कुछ कुछ पाना है, तो कुछ कुछ छोड़ो। बहुत कुछ पाना है तो बहुत कुछ छोड़ो। और सबकुछ पाना है तो 'सबकुछ' छोड़ो। छूटेगा तो रागी कहलाओगे, छोड़ोगे तो वैरागी कहे जाओगे और खुद में लीन हो जाओगे तो वितरागी बन जाओगे।**



लीन हो जाओगे तो वितरागी बन जाओगे। अगर इसमें किंतु परंतु है, तो प्राप्ति भी उसी अनुपात में है। यह है सीधा और सरल गणित। अब आप और हम देखें कि हम अपने मिले हुए सुंदर जीवन से क्या चाहते हैं? यही चाहते हैं ना कि हमारा जीवन सुख शांति समृद्धि से भरपूर हो। पर कहते हैं, आत्मा सत चित्त आनंद स्वरूप है। वो स्वयं में ही भरपूर है। पर विचार करें कि ऐसा क्यों कहा जाता है? हम जानते हैं इस पहली को, तो उसकी सही परिभाषा क्या है? सत् माना कोई भी कार्य की या कामना की या इच्छा की नींव सत्य पर आधारित हो। चित्त माना ही चेतनता शुभ व शुद्ध भावना से भरपूर हो। तब ही उनके व्यवहार से आनंद प्रस्फुटित होगा। ये तीनों ही क्रम एक दूसरे के पूरक हैं। यदि एक भी कम है या उसमें कमी है, तो स्वयं

को जोड़ना होगा। 1. विधिपूर्वक पढ़ाई, 2. समय का महत्व, 3. स्फूर्ति, 4. सीखने की लगन।

असाधारण बनने के लिए आज हम जैसा जीवन जी रहे हैं, उससे हटकर ही कुछ असाधारण प्राप्त कर सकते हैं। पर होता क्या है कि हम दो घोड़ों पर सवार होना चाहते हैं। हमारी ये अवस्था पढ़ने की है, पर हमारा ध्यान, हमारी चाहना है हम मौज शॉक करें और पढ़ाई भी करें। ये तो ऐसा ही हुआ कि जैसे एक मयान में दो तलवारें रखना। तब भला हम एक ही समय पर दो लक्ष्य कैसे प्राप्त कर सकते हैं! अगर मुझे टॉपर बनना है तो मुझे स्वयं ही समझपूर्वक तय करना होगा कि मुझे क्या करना चाहिए। आप कहेंगे, सबलोग तो ऐसे ही करते हैं। ये विचार ही दर्शाता है कि आप भी वैसा ही बनते हैं। मतलब कि आप

रहता है। सबकुछ प्राप्त करना चाहते हैं तो सबकुछ छोड़ते नहीं हैं, यही अप्राप्ति का कारण है। यदि इस सत्य को स्वीकार नहीं करते तो फिर 'कुछ चाहिए' का प्रश्न आपके सामने सदा खड़ा ही रहेगा। कहते हैं, चार जगह के लिए निमंत्रण की जरूरत नहीं होती। 1. माता पिता के घर, 2. मित्र के घर, 3. गुरु के घर और 4. परमात्मा के घर।

तो सही मायने में हम सबकुछ पाना चाहते हैं तो ईश्वर के घर जाने के लिए निमंत्रण की जरूरत नहीं। और जो ईश्वर के दरबार में पहुंचा, वहां तो अखुट है, किसी चीज की कमी नहीं। कहते हैं, भोलेनाथ का भण्डारा भरपूर, काल कंटक दूर। तो आपके लिए भी ईश्वर का घर सदा खुला है। बस! खोलना है तो अपने दिल का द्वार...। यही द्वार है प्राप्ति का आधार।

जिसे वर्तमान में जीना हो, उसे अपने भी उतारें। पर याद रखें, अतीत यानी पास्ट

अतीत को मारना होगा। यह आदर्श वाक्य उन लोगों को समझाया जाता है, जो आज के जीवन में अशांत हैं, परेशान हैं। लेकिन, इस संवाद को यदि अधूरा पकड़ा, तो शांति फिर भी नहीं मिलेगी। शांति की खोज में हो, तो

इस संवाद का आधा हिस्सा जो दिखाई, सुनाई नहीं देता, उसको भी पकड़ना होगा। दरअसल गुजरे हुए पर टिके रहे, तो उसका बोझ दिल-दिमाग पर बना रहता है। आज जब प्रतिपल दुनिया बदल रही है, नई-नई चुनौतियां सामने हैं, ऐसे में यदि गुजरे हुए पर ही टिके रहे, तो और उलझकर रह जाएंगे। जैसे बाजार से थैले में कोई सामान लेकर आएँ और घर पर सामान निकालने के बाद भी थैला टांगे रहें तो यह भी हमारी भूल होगी। काम हो गया, उसे



वर्तमान में काम आएँ। तो जीवन पुराने और नये का जोड़ होना चाहिए। जिंदगी, जो गुजर गया और जो चल रहा है, उसमें दूरी बनाने का नाम है। जैसे हमारे पुराने लोग कहा करते थे कि अपने, अपने होते हैं और पराये, पराये। इसका फर्क जान लेना समझदारी है। यह छोटी सी बात कई घरों में, कई पुराने लोगों ने कही होगी। इसे केवल अतीत न मानें। अतीत और पुराने का फर्क समझकर वर्तमान के जीवन में इनका प्रयोग कीजिए, शांति जरूर मिलेगी।



**अफ्रीका-केन्या।** यू.ओ.एन. में 'पॉज फॉर पीस' विषय पर विद्यार्थियों को सम्बोधित करने के पश्चात् असिस्टेंट डीन तथा प्रोफेसर के साथ ब.कु. प्रतिभा।



**सिंगापुर।** 'द मैजिक ऑफ मेडिटेशन' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् चित्र में ब.कु. सपना, लाजपत नगर, दिल्ली, ब.कु. ममता तथा सिंगापुर सेवाकेन्द्र संचालिका।



**यू.एस.ए.-न्यूयॉर्क।** यू.एस.ए. में ब्रह्माकुमारीज द्वारा मानवता की सेवाओं के चालीस वर्ष पूर्ण होने पर सीनेटर जेम्स एन. टेडिस्को की ओर से ब्रह्माकुमारी जयंती को सम्मानित किया गया। साथ हैं ब.कु. डॉ. कला।



**साऊथ अफ्रीका।** इंटरनेशनल पीस डे के अवसर पर 'पॉज फॉर पीस' अभियान कार्यक्रम के दौरान विश्व में शांति के प्रकम्पन फैलाते हुए एम.सी. ल्यूसीली मेयर, सी.ई.ओ. क्रिसालिस एकेडमी तथा विभिन्न धर्म प्रतिनिधियों के साथ ब.कु. चक्रधारी तथा ब.कु. प्रतिभा।



**ऑस्ट्रेलिया।** सिडनी के फाइव डॉक सेन्टर पर नेपाली उत्सव 'जनाई पूर्णिमा' तथा दर्शक 'त्यौहार' मनाने के पश्चात् समूह चित्र में भाई बहनों के साथ ब.कु. सीता तथा ब.कु. प्रीति।



**लंडन।** ब्रह्माकुमारीज के ग्लोबल कोऑपरेशन हाउस में आयोजित 'नॉन-वायलेंस इन टुडेज वर्ल्ड' विषयक कार्यक्रम के दौरान चर्चा करते हुए लॉर्ड भिखू पारेख, एमिनेंट एकाडेमिक, पॉलिटिकल थ्योरिस्ट, एमेरिटस प्रोफेसर ऑफ युनिवर्सिटी ऑफ वेस्टमिन्स्टर एंड फॉर्मर चेयर ऑफ द कमेटी ऑन मल्टी-एथनिक ब्रिटेन, यूरोप में ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब.कु. जयन्ती तथा फॉर्मर बी.बी.सी. जर्नलिस्ट एंड प्रेजेन्टर एमिली बुकानान।



**न्यूयॉर्क।** ब्रह्माकुमारीज के मैनहटन सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'द रिलेवेन्स ऑफ एनर्जी, पावर एंड स्ट्रेन्थ इन फिजिकल एंड स्पीरिचुअल वर्ल्ड्स' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में पद्मश्री अवादी इंडियन एक्सट्रीम स्पोर्ट्सपर्सन एवं स्काई डाइवर शीतल महाजन, माधवी पटेल, ब्रह्माकुमारी बहन तथा अन्य।



**लंदन-लोब्रो।** कार्यक्रम के पश्चात् वहाँ के ब.कु. भाई बहनों के साथ समूह चित्र में माउंट आबू से ब.कु. प्रकाश, ब.कु. सुधीर तथा ब.कु. श्रीनिवास।